International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 02-11-2024, Accepted: 03-12-2024, Published: 17-12-2024
Volume 10, Issue 6, 2024, Page No. 32-34

कोरोना महामारी के समय पुलिस का स्वरुप

डॉ. मोहित कुमार नायक
Doctoral Fellow, Department of Public Administration, MLSU Udaipur, Udaipur, Rajasthan, India

सारांश
दुनिया का प्रत्येक देश अपने देश में स्वास्थ्य सेवाओं को परिपूर्ण एवं विकसित करने के लिए अग्रसर रहता है। कई देश अप्रत्याशित महामारियों से प्रभावित होते हैं जिसकी वजह से जनधन की हानि उनके विकास की राह में रोड़ा बनती है। कोरोना महामारी एक अप्रत्याशित महामारी थी जिसने पूरे विश्व को झकझोर दिया। इस विषम परिस्थिति से लड़ने के लिए कई देशों को जनधन की अपार हानि उठानी पड़ी। कोरोना वायरस पूरी दुनिया के लिए एक सबक के रूप में था विशेष रूप से भारत के लिए जहा इस अप्रत्याशित महामारी में कई लोगों की मौत हुई। भविष्य में प्रशासनिक एवं स्वास्थ्य दृष्टि में हमारी सरकारों को ऐसी भयंकर महामारियों से निपटने के लिए कई प्रकार के नए मॉडल एवं योजनाओं को बनाने की आवश्यकता रहेगी। इस विषम परिस्थिति में पुलिस की भूमिका प्रत्येक देश के लिए सबसे महत्वपूर्ण रही। पुलिस ने इस अप्रत्याशित महामारी के दौरान लॉकडाउन एवं कानून व्यवस्था का पालन करवाने जैसी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाई परंतु पुलिस को ऐसी महामारियों से निपटने के लिए विशेष तकनीकी प्रशिक्षण नहीं होना एक बहुत बड़ी समस्या थी। कोरोना ने पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था पर एक गहरा वार किया एवं कई देशों को आर्थिक रूप से अपंग कर दिया। भविष्य में हमें हमारे देश में ऐसी परिस्थितियों से लड़ने के लिए पुलिस को विशेष तकनीकी प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है जिससे भविष्य में आमजन सुरक्षित एवं स्वस्थ रह सके।

मूल शब्द: कोरोना, महामारी, प्रशिक्षण, पुलिस, कानून व्यवस्था, लॉकडाउन, आमजन, जरूरतमंद, सामाजिक सेवा, संक्रमण

भारत सरकार ने मार्च 2020 में घोषणा की थी कि आगामी 21 दिनों तक सभी लोग अपने घर पर चहार दिवारी में रहेंगे। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय कोविड–19 के सरकारी ट्रैकर ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि इस महामारी में सबसे सख्त प्रतिक्रिया भारत देश की रही। लॉकडाउन का असर हिंदुस्तान के 130 करोड लोगों पर पड़ा जो की बाद में और बढ़ा दिया गया। लॉकडाउन के दौरान कई प्रकार के प्रतिबंध एवं केवल अनिवार्य वस्तु की आवाजाही से महामारी पर काबू पाने की कोशिश की गई। लॉकडाउन में बड़े शहरों में मौजूद प्रवासी मजदूरों के लिए बहुत बड़ी विकट समस्या खड़ी कर दी, प्रवासी मजदूर बड़े शहरों से अपने गांव की ओर पैदल ही चलने पर मजबूर हो गए। इस महामारी ने कई लोगों की जीवन लीला समाप्त कर दी कई लोगों को आर्थिक रूप से मृत कर दिया। इस विकट परिस्थिति में आमजन को नियंत्रित करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली पुलिस रही।पुलिस के दो स्वरूप दिखे एक तरफ पुलिस ने लोगों पर सख्ती अपना कर लॉकडाउन के दौरान महामारी के संक्रमण को फैलने से रोकने में अपनी भूमिका निभाई दूसरी तरफ पुलिस ने आम जल एवं गरीब लोगों के लिए सामाजिक सेवा के कार्य करते हुए कई लोगों को भोजन एवं आवश्यक सामग्री उपलब्ध करवाई।

▪ सामाजिक सेवा एवं सख्ती

पुलिस के दो चेहरे–महामारी के दौरान पुलिस के दो कार्य स्पष्ट थे, सार्वजनिक कानून व्यवस्था की पालन करवाना जिसमें कई क्षेत्रों में पेट्रोलिंग के माध्यम से सामाजिक दूरी के नियम की कठोरता से पालन करवाना लोगों को अपने घर से बाहर न निकलने देना जिससे संक्रमण को रोका जा सकता था इसके अलावा पुलिस का एक दूसरा चेहरा भी इस महामारी के दौरान लोगों के सामने आया, पुलिस के कई कर्मचारियों ने मजदूर एवं गरीब बस्तियों में रहने वाले लोगों के लिए कई आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था करी। कई लोगों को अपनी आवश्यकताओं की वस्तुओं को घर–घर जाकर उपलब्ध करवाया इसके अलावा कई पीड़ितों को दूसरे शहरों से अपने घर पहुंचने का कार्य किया गया। पुलिस ने आमजन के साथ समन्वय करके जिस प्रकार यह कार्य किया वह प्रशंसनीय है। राजस्थान के भीलवाड़ा में महा कर्फ्यू के दौरान पुलिस के कार्यों में जनता सेवा का एक नया आयाम जोड़ दिया गया।इसके कारण पुलिस अधिकारी संकटग्रस्त नागरिकों की सेवा में जुट गये हैं. हालाँकि अधिकारियों के इस सेवा भाव की चर्चा मीडिया में कम ही होती है, बीट कांस्टेबलों ने खाने–पीने की सामग्री और दवाओं के दैनिक वितरण की ज़िम्मेदारी अपने हाथ में ले ली है और पुलिस थाने आवश्यक सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं. कुछ ज़िलों में तो पुलिस थाने भुखमरी से लड़ने के लिए नागरिक निकायों के साथ मिलकर भोजन हब बन गए हैं भारत में कई ऐसे पुलिस कर्मी थे जिन्होंने अपने निजी खर्चे पर भोजन के पैकेट एवं कई आवश्यक सामग्री को जरूरतमंदों के पास पहुंचने का काम किया। आमतौर पर सामान्य नागरिक पुलिस से भय रखता था परंतु इस विकट परिस्थिति में लोगों के मन में पुलिस के प्रति सम्मान बढ़ गया था। मानवता और करुणा का यह चेहरा पुलिस के लिए एक क्रांतिकारी परिवर्तन जैसा था। महामारी के पश्चात कई पुलिस कर्मियों को सम्मानित किया गया। कई ऐसे उदाहरण भी देखे गए जिसमें पुलिस कर्मियों ने जन सेवा के दौरान खुद संक्रमण का शिकार होते हुए भी कार्य को जारी रखने का काम अनेक माध्यमों से किया।पूरे देश में स्थानीय पुलिस एजेंसी को सामाजिक दूरी बनाने के लिए नियम को लागू करने की जिम्मेदारी सौंप गई। पुलिस की जिम्मेदारी आमजन को सख्ती के साथ–साथ उनके परिवर्तित जीवन में आवश्यक वस्तुओं को उपलब्ध कराने का कार्य प्रशसनीय रहा। इस महामारी में कई स्वयं सेवी संगठनों ने,कई प्रकार के सामाजिक संगठनों ने लोगों की सेवा करने के लिए अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस विकराल स्थिति में सबसे ज्यादा प्रभावित वर्ग जो था वह था दीहाड़ी मजदूर, दैनिक पत्ते पर काम करने वाला मजदूर इस महामारी के दौरान रोटी के लिए तरस गया इस कठिन परिस्थिति में कई संगठनों एवं पुलिस सेवा के कर्मचारियों ने गरीब मजदूरों को भोजन एवं आवश्यक सामग्री उपलब्ध करवाने का कार्य किया। साथ ही कई मजदूर जो दूसरे शहरों में फस गए थे उनको अपने घर पहुंचने का कार्य करने में सभी संगठनों एवं पुलिस सेवा के कर्मचारियों ने मदद की।

- **पुलिस के प्रशंसनीय कार्य**

कई राज्यों में हमें ऐसे उदाहरण देखने को मिले हैं कि जिसमें पुलिस कर्मचारियों ने इस विकट परिस्थिति में आमजन की सहायता के लिए विभिन्न प्रकार के कदम उठाए है।

जिनमे मध्य प्रदेश में ऊर्जा नामक कार्यक्रम जिसमें पुलिस थानों ने महिलाओं की सुरक्षा के लिए गठित महिलाओं के एक स्वयं सेवी दल जिसे ऊर्जा नमक कार्यक्रम कहा गया जिसके माध्यम से जागरूकता फैलाने का कार्य किया गया।

उसी प्रकार राजस्थान में राजसमंद जिले में इस महामारी के कारण आई आर्थिक तंगी के कारण पारिवारिक विवाद का निपटारा करके पुलिस ने प्रशासनीय कार्य किया। पुलिस का यह स्वरूप सभी आम नागरिकों के लिए महत्वपूर्ण और सुख दायीं था।

इस महामारी के दौरान कई पुलिस कर्मियों ने नवीन तरीकों से लोगों को जागरूक करने का काम किया जिसमें राजस्थान पुलिस के एडीजी अमृत कलश के द्वारा गाया गीत सोशल मीडिया पर वायरल हुआ वही आईपीएस सुनील शर्मा का गीत और कविता सोशल मीडिया पर कई लोगों द्वारा सुना गया।

कोरोना योद्धाओं के लिए, जिसमें पुलिसकर्मी, होमगार्ड, चिकित्सक सहित अन्य सभी देशवासी हैं, जो इस युद्ध से लड़ रहे हैं। एक पुरानी फिल्म की धुन पर कुछ पंक्तियां लिखी है, जो सबके सामने पेश कर रहा हूं। इसी प्रकार सुनील शर्मा ने गुलाबी नगर को लेकर एक वीडियो शूट किया। उसमें उन्होंने अपनी आवाज दी और बताया कि अब मौसम बदला–बदला है, सब लोग अपने घरों में बंद है। फिजा कह रही है, रूको, यह हवा नहीं, जहर है। यकीन नहीं होता है कि यह वही गुलाबी नगर है। इसके अलावा सिपाही और अन्य पुलिसकर्मियों के वीडियो सोशल मीडिया पर छा रहे हैं।

महामारी के दौरान अन्य देशो की तुलना भारत की पुलिस की स्थिति

इस विषम परिस्थिति में पुलिस नेतृत्व से यह अपेक्षा करना गलत नहीं होगा कि वह उपलब्ध सीमित संसाधनों से अधिक व्यापक सोच से कोरोना महामारी के समय आने वाली समस्याओं को मात देने में सफल रहेगी. पुलिस, किसी भी शासन–प्रशासन का एक ऐसा महत्वपूर्ण अंग है जो कि इस परिस्थिति में लॉकडाउन, धारा–144, किसी इलाके को सील करने आदि की कवायद को मूर्त रूप दे रही है, इसके साथ–साथ कोरोनावायरस महामारी से देश को बचाने के लिए सोशल डिस्टेंसिंग को महत्वपूर्ण बताया जा रहा था, जिसे लागू कराने की बड़ी जिम्मेदारी पुलिस विभाग की रही, वह इसे बखूबी निभाने में सक्षम रहे लेकिन काम के बोझ के दबाव के चलते पुलिसकर्मी तनाव में तो आ ही रहे थे, इसके अलावा तमाम पुलिसकर्मी कोरोना पॉजिटिव भी होते जा रहे थे, जो अलग से चिंता का कारण बना हुआ था उपरोक्त के क्रम में यह भी याद रखना होगा कि चिकित्सा कर्मचारी जब संक्रमित व्यक्तियों को आइसोलेशन अथवा क्वारेंटाइन में डालते हैं तब उनकी सहायता मौके पर मौजूद पुलिस ही करती थी. यहां यह भी याद रखना है कि स्वास्थ्य कर्मचारियों के पास मानक रूप से सुरक्षात्मक वस्त्र होते हैं, परंतु पुलिस के पास ऐसा कुछ नहीं होता था इसलिए पुलिस का कार्य ज्यादा जोखिम भरा रहता था . उसे कोरोना पॉजिटिव को पकड़ने से लेकर अस्पताल तक पहुंचाना होता था. इस दौरान वह सीधे यानी शारीरिक रूप से ऐसे मरीजों के टच में रहता थे, जो काफी घातक होता था. ऐसे में यह जरूरी हो जाता था कि हमारी पुलिस उन देशों से सीख ले जहां कोरोना का संक्रमण अपने देश से पहले फैला था. यह भी विचारणीय है कि अन्य देशों के कानून एवं व्यवस्था का सम्पादन भारतवर्ष से भिन्न है. अतः पूरी तरह से तो चीन, जर्मनी, स्पेन अथवा इटली का उदाहरण यहां पर प्रयोग नहीं किया जा सकता था, फिर भी काफी कुछ सबक लिया जा सकता था अन्य देशों से भारत की तुलना की जाए तो चीन में पुलिस सार्वजनिक सुरक्षा मंत्रालय के अधीन है तथा आंतरिक व्यवस्था को बनाये रखने के लिए आदेशित है. चीन का सार्वजनिक सुरक्षा मंत्रालय चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के सीधे नियंत्रण में है. अतः उन्होंने जिस प्रकार से हुबेई एवं वुहान में लॉकडाउन किया था, उसको भारत में वैसे लागू नहीं किया जा सकता था. चीनी सुरक्षा व्यवस्था की चीन में कोई चर्चा भी नहीं करता जबकि भारत में 'बातों के बताशें' बनाए जाते हैं. ऐसा नहीं है कि लॉकडाउन के दौरान ईरान, इटली और जर्मनी में कानून व्यवस्था की समस्याएं उत्पन्न ही नहीं हुई थीं. आस्ट्रेलिया में समुद्री बीच पर बहुसंख्यक पर्यटक पहुंच गए थे, जिनको हटाना पड़ा. जर्मनी में भी लोग लॉकडाउन के दौरान पार्कों में घूमने निकल पड़े थे. इस प्रकार यह स्पष्ट है कि केवल भारत में ही इस लॉकडाउन का उल्लंघन नहीं हो रहा था, परंतु अन्य देशों में भी हो रहा था और इससे निपटने की जिम्मेदारी अंत में पुलिस के ही कंधों पर आती थी .चीन ने आधिकारिक रूप से यह प्रकाशित किया था कि कोरोनावायरस के दौरान 96 पुलिस अधिकारी संक्रमित होकर अपने जीवन से हाथ धो बैठे थे,. भारत में रिपोर्ट के आधार पर सबसे पहला केस मुम्बई में जीआरपी का एक सिपाही था तथा दिल्ली में सीआरपीएफ के एक उच्च अधिकारी को कोरोनावायरस होना प्रकाश में आया था. दिल्ली के निजामुददीन थाने के कुछ पुलिसकर्मी भी कोरोना पॉजिटिव हो गए थे. यह वो लोग हैं जिन्होंने तबलीगी जमात खाली कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी. भविष्य में अन्य पुलिस कर्मचारियों को भी उपरोक्त संक्रमण होने का भय बना रहता था. चूंकि पुलिस के कार्य में सोशल डिस्टेन्सिंग का न होना ही आवश्यक होता था अतः इसके फैलने की भी समस्या गंभीर हो सकती थी इस संबंध में भी पुलिस लीडरशिप को सजग रहना पड़ता था. पुलिस वालों की लगातार कोरोना की जांच हुई ताकि यह सामूहिक रूप में सामने नहीं आ सके.

निष्कर्ष

22 मार्च को प्रधानमंत्री के आह्वान पर पूरे देश में जनता कर्फ्यू लगाया गया था जो काफी सफल भी रहा, परंतु सांय पांच बजे प्रधानमंत्री के आह्वान पर कोरोना की लड़ाई लड़ रहे योद्धाओं के समर्थन में लोग शंखनाद, घंटे–घड़ियाल और थाली बजाते हुए कई जगह जुलूस के रूप में सड़क पर निकल आए तो स्थिति काफी खराब हो गई. जिस कारण से उपरोक्त कर्फ्यू लगाया गया था, उसका उद्देश्य ही खत्म कर दिया. इसके बाद 24 मार्च से 21 दिन का लॉकडाउन घोषित किया गया था जो अभी भी जारी है, इसके दौरान भी कानून व्यवस्था अपरिचित कारणों से प्रभावित हो रही रही थी , जो पुलिस के सामने एकदम नई चुनौती थी.

कोरोना की दहशत के चलते विभिन्न उद्योगों के श्रमिक जल्द से जल्द अपने–अपने घर लौट जाना चाहते थे. ट्रेनें बंद होने के कारण जो घर नहीं जा पाए हैं, वे पैदल अथवा अन्य साधनों से जाने की कोशिश करने लगे थे सैकड़ों किलोमीटर की पैदल यात्रा कोई कैसे कर सकता है, जबकि इनके पास पैसे की भी किल्लत थी, दाने–दाने को मोहताज थे. इनके चलते सामाजिक दूरी बनाए रखने का तानाबाना टूट गया.

संदर्भ सूची

1. कोरोनावायरस संकट के समय पुलिस के सामने कई चुनौतियां, द प्रिंट, आनंद लाल बनर्जी, अप्रैल 2020
2. पुलिस और सुरक्षा बलों में कोरोनावायरस संक्रमण, जागरण, अरुण कुमार सिंह, मई 2020

3. पुलिस डिस्क्रेशन एंड रोल ड्यूरिंग कोविड–19 पेन्डेमिक, प्लेअडर्स, संजना जैन, 2020
4. कोरोनावायरस के समय पुलिस की भूमिका की पुनरकल्पना, यूनिसेफ, तनिष्ठा दत्ता, शर्मिला रे, मोइरा दवा, जून 2020
5. "कोविड–19 का प्रकोपः एक सिंहावलोकन" National Library of Medicine, वॉल्टर क्लूवर, 2020 मार्च।
6. पुलिस सेवा और जन स्वास्थ्यः कोविड–19 महामारी की अगली पंक्तियों में राज्य की क्षमता, CSDS, अक्षय मंगला, विनीत कपूर, 2020
7. महामारी में पुलिसिंग, National Library of medicine, एन मेरी, युसुहीरो, जुलाई 2021
8. "भारत में COVID–19 संक्रमण का पहला पुष्ट मामला: एक केस रिपोर्ट", भारतीय चिकित्सा अनुसंधान जर्नल, एंड्रूयज, मई 2020